

महान वलब द्वाया छठ व्रतियों के बीच दूध का वितरण किया गया



प्रभात मंत्र संवाददाता
चैनपुर (पलामू) : प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत चैनपुर बाजार मोहनपुर में महान वलब द्वाया छठ व्रतियों के लिए दूध का वितरण किया गया। महान वलब द्वाया शनिवार को वितरण करते हुए धूर्य अंतर्थ उपाध्यक्ष मनोज सिंह, भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा अध्यक्ष ज्योति पांडे, अध्यक्ष अमित सोनी ने छठ व्रतियों के लिए दूध का वितरण किया गया। मार्गों पर पूर्व उपाध्यक्ष मनोज सिंह ने कहा की छठ महापर्व हिंदुओं का आस्था का पर्व है इस पर्व में सभी को छठ व्रतियों का सराहनीय योगदान करना चाहिए। वहाँ मैं भारतीय भाषायुमो युवा मोर्चा अध्यक्ष पांडे ने कहा की ऐसा महान पर्व छठ में सभीयों के सहयोग करने से वैसे लोगों को भगवान का आशीर्वाद जरूर मिलता है, छठ महापर्व भगवान करते उपस्थित चैनपुर वाड पार्श्व

विनोद कमलापुरी, अध्यक्ष हेमचंद प्रसाद, भाजपुरो किसान मोर्चा अध्यक्ष मनोज दास, राजेंद्र मालाकार, राजेंद्र अर्य, प्रीतम कुमार, दीपक गुप्ता, मिथिलेश प्रसाद, दिनेश कश्यप, दिलीप सोनी, राजू सोनी, रूपेश सोनी, अकिंत कुमार, अमन मालाकार, अनंगोल मालाकार, विनोद कमलापुरी सहित महान वलब के क्रमांक वितरण करना चाहिए। वितरण करते उपस्थित चैनपुर वाड पार्श्व

संपादकीय

क्यों हारे हिमाचली कलाकार

बहुत

किंग टार्कुर दामस राठो की अमृत छलक थे और इस बार रामपुर का लवी ने हिमाचली गायक एसो भारद्वाज को परास्त कर दिया। लोक गायक का गुरुसा फटना स्वाभाविक है और जिस तरह सोशल मीडिया पर हिमाचल की सांस्कृतिक नौटंकी का पदार्पण हो रहा है, उसे समान्य नहीं माना जा सकता। कुछ तो रही होगी तेरी बरखी, बरना हम तेरी ही गलियों में बच्चों चिखते। उम्मीद है ऐसी भारद्वाज जैसे लोकगायक का क्रंदन सरकार के गलियारों में सुना जाएगा। आश्चर्य यह कि जब दशहरा की सात सांस्कृतिक संध्याओं में से छह लूटक बाहरी कलाकारों में बांट दी गई थीं, तो भी खूब हल्ता हुआ था, लेकिन संस्कृति के हिमाचली कान अब सियारों हैं या फरेबी हैं जो कुछ सुनना नहीं चाहते। अब यही आरोप रामपुर की लवी की हकीकत में, स्थानीय कलाकारों की प्रताङ्कनों के सबूत दे रहा है। बाकी सांस्कृतिक समारोह भी इसी परंपरा के गवाह बन रहे हैं यानी जिस हिमाचली संस्कृति के उत्थान के नाम पर समारोह हो रहे हैं, वहाँ स्थानीय कलाकार ही बार हार रहा है। बेशक इन सांस्कृतिक समारोहों की संख्या लगातार बढ़ रही है और बढ़ रहा है भारी बजट का जलवा, लेकिन सारे

तामज्ञन का नाम न हमारेव का सस्कृत
का संवद्धन और नहीं स्थानीय कलाकार
को मिल रही इज्जत। सांस्कृतिक
समारोहों के आय-व्यय का हिसाब पहले
पारदर्शिता के अभाव में एक ऐसा दस्तूर
बन गया है, जहाँ ये स्थानीय विधायक या
मंत्री की अपनी शानों शौकत में
प्रशासनिक मजदूरी करवा रहा है। मंच पर
न कला-संस्कृति विभाग की कोई
ईमानदार कोशिश और न ही प्रशासन की
कोई जवाबदेही। बस एक प्रदर्शन है थोड़ा
सा हल्ला गुल्ला और मनपसंद के बाहरी
कलाकारों को रसगुल्ला। यह सब इसलिए
हो रहा है क्योंकि सांस्कृतिक समारोह
बिना किसी नियमन, उद्देश्य-प्रक्रिया
प्रणाली और पारदर्शिता के सिर्फ
राजनीतिक पांडियों का सवाल हो गए हैं।
ऐसे-ऐसे समारोह राज्य स्तरीय हो गए था
ऐसे आयोजन स्थल चुन लिए गए, जो

का संगठन खड़ा करना और उसी
संगठन के बलबूते महाशवितशाली
रावण को पराजित करना, अयोध्या
का शासन सम्भालना, सीता को
लेकर लोकोपवाद, लोकतन्त्र
लोकलाज से चलता है— सूत्र की
घोषणा और सीता का त्याग, सीता
जी का महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में
आश्रय ग्रहण करना, वाल्मीकि द्वारा
सीता के पुत्रों लव-कुश को एक
साथ सत्र व शास्त्र की साधना में
निपुण करना, इनमें से अनेक
ऐतिहासिक प्रसंगों को उहोंने
लेखनीबद्ध किया और अनेक प्रसंग
उनके आश्रम में ही घटित हुए।

में आयोजन स्थल चुन लिए गए, जो ला संरक्षण के बजाय सियासी द्रुतकरिता के पर्याय बन गए। प्रदेश की किसी भी सरकार ने आज तक मंदिरों की आय, वार्षिक मेलों व संस्कृतिक समारोहों के आय-व्यय एक लड़ी में पिरोकर नहीं देखा, इन्होंना ये सारे आयोजन केवल तमाशा बनते हैं। होना यह चाहिए कि प्रदेश के लाला, संस्कृति एवं भाषा, पर्टीटन तथा दर्शनाएं जैसे विभागों को लाए एवं जनसंपर्क जैसे विभागों को लाकर एक सशक्त विभाग की रैकल्पना करनी चाहिए और उसके तहत एक मेला विकास विधिकरण, एक मंदिर विकास विधिकरण तथा कला एवं संस्कृति की एक स्वतंत्र अकादमी होनी चाहिए, जबकि भाषा विभाग को शिक्षा विभाग सुरुद्द कर देना चाहिए या इसके अलग से अकादमी होनी चाहिए।

लालों, कलाकारों, व्यापारियों और भजन मंडलियों का संरक्षण हो सकता है। अगर इन तमाम आयोजनों के तहत अब तक करीब दो सौ करोड़ भी खर्च कर रहे हैं, तो ह आय अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर रही। आश्चर्य यह कि हिमाचल में कोई ऐसा लाला केंद्र नहीं जहां नियमित कलाकारों को अवसर मिले। ऐसे में प्रदेश के लगभग ह से आठ मंदिर परिसरों को कला केंद्र मान कर इनके साथ सभागार व प्रदर्शनीय पल विकसित करने होंगे ताकि श्रद्धालुओं को हर साथ संस्कृतिक संस्थाएं देखने नने को मिल सके। वार्षिक मेलों व संस्कृतिक समारोहों के आयोजन अगर मेला विधिकरण के तहत होते हैं, तो हिमाचल का एक ऐसा कैलेंडर सामने आएगा जो हर एक कलाकार को उसके कद के मुताबिक अवसर प्रदान करेगा। तमाम कलाकारों रैकिंग करके प्राधिकरण इन्हें वार्षिक अनुबंध के आधार पर मेले, संस्कृतिक या धार्मिक आयोजन आवंटित कर पाएगा। इससे न बंदरवांट रहेगी और नहीं कलाकारों को उपेक्षा होगी। इतना ही नहीं पर्यटक सीजन और विभिन्न पर्यटन के अवसरों के बीच न संतुलित रहेगा। इसके अलावा एक नई शृंखलाएं जोड़ी जा सकती हैं, जबकि प्रदेश प्रमुख शहरों में संगीत सम्मेलन, लोक कलाकार, महोत्सव व रेडिओ-टीवी लालाकार सम्मेलन भी करवाए जा सकते हैं। दरअसल मेलों, संस्कृतिक व धार्मिक मारोहों के वर्तमान आयोजन केवल सियासी झंडियाँ हैं, जहां बाहरी कलाकारों को नालों द्वारा बुला कर समय, धन और औचित्य को बर्बाद किया जा रहा है।

कुछ अलग

विराट-शमा का फाइनल

2

हार गए तो हार गए

मैंने कहा- 'अमां यार परेशान क्यों होते हो, हार गये तो हार गये।' वे बोले- 'यह बात नहीं है।' मैंने पूछा- 'तो क्या बात है?' बोले- 'वे जीत गये न।' 'तो क्या हुआ, चुनाव में एक जीतता है दूसरा हारता है।' 'आप नहीं समझते।' मैंने आईजी यह रहस्य? 'इसमें रहस्य की बात क्या है?' आप परेशान मत होइये, अभी चंद दिनों में सारी पोल खुल जायेगी और असलियत सामने आ जायेगी। मेरे दिलासे से वे ज्यादा अधीर होकर बोले- 'भाई जर्ज आप ठहरे भावुक आदमी, यथार्थ के कठोर धरातल की सखति का आपको पता नहीं है। वे जीते हैं और मेरे सीने के नाग किस तरह फुकफार रहे हैं आपका अंदाजा नहीं है।' मैंने कहा- 'आप राजनेता हैं, सांसद में बदाश्ट करते रहे हो, अब यह भी करो, हार गये तो हार गये।' 'आपको लगता है कि वे सरकार बना लेंगे।' 'मैं भी तो आपसे यही कह रहा था कि वे सरकार नहीं बना पायेंगे, मैंठक भी तुलते देखे थे।' 'आपने कमी?' मैंने कहा- 'आप सही फरमाते हैं लेकिन मेरी तो एक बात समझ नहीं आई कि जरूर

आप हारे हैं और वे जीते हैं, पूरे शहर में दंगे हैं
यह कौनसी पालिटिक्स है?' वे घुटे हुये थे,
'जब तक नये चुनाव नहीं हो जाते तब तक
यों ही आगजनी और लूटपाट होती रहेगी।
मतलब ?' 'मतलब साफ है, कुछ ल
वैचारिक मतभेद फैलाकर और कुछ में ढहश
करने से हमारा बोट बैंक मजबूत होता है।'
हम तो धर्मनिरपेक्ष जो ठहरे। इस बात को तो
ही नहीं, सब समान है।' मैंने तर्क दिया तो
बत्तीसी निकाल कर कहा- 'यह सब बातें
लिये हैं, हमारे लिये सत्ता सुख से बड़ी और क
नहीं है।' 'यह तो सोसाइटी के लिए बड़ी
स्थिति है।' मैंने कहा। वे बोले- 'सोसाइटी ब
करने से कुछ नहीं मिलता भाई जी। बुरा करो
सुरक्षा के लिए आसरा-तलाशती है, यह
और कहीं नहीं, राजनेताओं की विशाल त
नीचे ही मिलता है।' 'लेकिन अब माफ कर
इन निरपराध भोले निरीह लोगों को, वे नहीं
वे क्या कर रहे हैं। आप हार गये तो हार गया

जीत भी
हाथों से
चुनव व
तक मैं
बाली।'
राष्ट्र क
'तो अब
सकता
रूप से
स्थिति न
हार गये
है?' 'त
लिए कैसे
रजनीति
मूल्यों व
पड़ने व
थोड़े दि
व्यवस्थ
और आ

जायेगे।' मैंने कहा। नेताजी ने टोपी को दोनों हाथों में ठीक किया और बोले- 'भाई जी जब तक दुबारा नहीं हों और मैं जीत नहीं जाऊं, तब तक आप एंजों की खुलज़ी यों ही नहीं मिट जाने वाले।' 'आप जरा राष्ट्र की तो कदर कीजिए।' 'जब तक मेरी परवाह नहीं तो मैं क्यों चिंता करूँ?' 'तो क्या इशारा है?' 'मैं बिना कुर्सी के जी नहीं बैठ सकता।' 'तो मत जीवित रहिये।' जितने सहज आपने यह वाक्य बोल दिया, उतनी सहज नहीं है भाई जी।' 'देखिये गुस्सा थूक दीजिए, तो हार गये, इतना बिगड़ने की क्या जरूरत दरअसल आपको समझाये कौन? सत्ता के लिए से-कैसे तालमेल हो रहे हैं। सिद्धान्तहीन जीवन को जन्म देकर लोग सत्तारुद्ध हो रहे हैं। मैं किसी की राजनीति करूँ भी तो इससे क्या फर्क नहीं है।' वे बोले। मैंने कहा- 'ऐसा करिये, दूसरे इन थोथे चर्चों को भी देख लीजिए, ताकि आप ज्यादा दिन चलेंगी नहीं। अंत मैं सरकार में पदोंनाम प्रियों के लिए बना लैंगे।'

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

वाल्मीकि समाज का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत के वाल्मीकि समाज का यहां के सप्तसिन्धु समाज से घनिष्ठ संबंध है। महावाल्मीकि जी का आश्रम पंजाब में अमृतसर के समीप स्थित है। यह आश्रम यहां के तीर्थ स्थानों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इस आश्रम की प्रसिद्धि के दो मुख्य कारण हैं— यहां बैठ कर महर्षि वाल्मीकि ने श्री रामचन्द्र जी के इतिहास को लिपिबद्ध किया था। अयोध्या नरेश दशरथ, उनके सुपुत्र श्री रामचन्द्र जी, राम वनवास, राम-वरण विवाद, राम द्वारा सामान्य जन का संगठन खड़ा करना और उसी संगठन वे बलबूते महाशक्तिशाली गावण को पराजित करना, अयोध्या का शासन सम्पालना, सीता को लेकर लोकोपवाद लोकतन्त्र लोकलाज से चलता है— सूत्र की धोषणा और सीता का त्याग, सीता जी का महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में आश्रम प्रहण करना, वाल्मीकि द्वारा सीता के पुत्रों लत-कुश को एक साथ शस्त्र व शस्त्र की साधना में निपुण करना, इनमें से अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों को उन्होंने लेखनीबद्ध किया और अनेक प्रसंग उनके आश्रम में ही घटित हुए। यह ठीक है कि रामचन्द्र जी के अनेक प्रसंग छिपपुट रूप से अनेक ग्रन्थों में मिल जाते थे, लेकिन यह महर्षि वाल्मीकि जी ही थे जिन्होंने इस पूरे इतिहास को समग्र रूप से एक साथ लिपिबद्ध करवा भारतीय इतिहास और राजनीति के इस प्रारंभिक इतिहास के सुरक्षित रखने में अवश्य ही कालजयी भूमिका निभाई। दरअसल रामचन्द्र जी के इतिहास से संबंधित अनेक पुरुष/स्त्री इसी सप्त सिन्धु क्षेत्र से ताल्लुक रखते थे। रामचन्द्र जी की माता कौशल्या जी पटियाला के समीप घड़ा गांव से थीं। आजकल भी पटियाला के राजकीय चिकित्सालाला का नाम माता कौशल्या के नाम पर ही है। कैकेयी भी कैकेयी प्रदेश यानी गन्धार की थी। रामचन्द्र जी के बेटों लत-कुश ने पंजाब के दो प्रसिद्ध शहर लाहौर और कसूर की स्थापना की। वाल्मीकि जी के इस आश्रम की ख्याति चहुं ओर फैल रही थी। विश्वामित्र और वासिष्ठ जी के आश्रम भी चर्चित थे। लेकिन वाल्मीकि के आश्रम में भारत का इतिहास लिखा जा रहा था और दूसरी ओर भविष्य में सुरक्षा की सशक्त दीवार का निर्माण किया जा रहा था। लत-कुश के साथ ही हजार युवा शस्त्रों का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। यहां देश के सामाजिक व्यवस्था में भी एक नया प्रयोग कर रहा था। अभी



तक की सामाजिक व्यवस्था में जो ज्ञान अर्जित करने में रुख रखता था, उसे शस्त्रों के प्रशिक्षण की जरूरत नहीं समझती थी। जो शस्त्रों का प्रशिक्षण प्राप्त करते थे, उनका ज्ञान साधना से कोई ताल्लुक नहीं होता था। लेकिन महावाल्मीकि भविष्य द्रष्टा थे। वे देश के भविष्य को देख रहे थे हजारों वर्षों दूर के भविष्य को। यही कारण था कि उन आश्रम में लब-कुश के साथ देश के हर हिस्से, विशेषज्ञ सप्त सिन्धु क्षेत्र के युवा एक साथ ही सार्वत्री और शास्त्र व साधना कर रहे थे। राम के इतिहास का पूर्वाद्वय इन्हीं आश्रम से जुड़ा हुआ था, लेकिन वाल्मीकि महाराज के आश्रम व महत्त्व इसलिए थी कि वे राम की सन्तान को प्रशिक्षित करते इस यात्रा के सनातन प्रवाह को आगे बढ़ा रहे थे। लेकिन अब वाल्मीकि जी से शास्त्र व सार्वत्री की शिक्षा केवल लब-कुश नहीं ले रहे थे बल्कि सप्त सिन्धु क्षेत्र के लाखों युवा इन आश्रम की ओर खिंचे चले आ रहे थे। महर्षि वाल्मीकि लिए वे सभी लब और कुश का रूप ही हो गए थे। भारत कोने कोने से लोग वाल्मीकि आश्रम की ओर खिंचे चले उत्तर रहे थे। ये लोग सभी जातियों, सभी वर्णों के थे। आज जिनवार्ष जनजाति समुदाय भी कहा जाता है, उन समुदायों के लोग यहां थे। वाल्मीकि आश्रम सही अर्थों में, यदि आज वह शब्दवाली का प्रयोग करना हो तो समाजिक समरसता व राष्ट्रीय मंच बन गया था। लेकिन यकीन इसमें सप्त सिन्धु क्षेत्र के लोग सर्वाधिक थे। पश्तून, बलोच, जट, बलतौ दरद, सप्त सिन्धु क्षेत्र का ऐसा कौनसा समुदाय था जो महावाल्मीकि आश्रम की ओर खिंचा नहीं चला आ रहा था। लेकिन इन सभी समुदायों की अलग पहचान समाप्त होकर एक नई पहचान उभर रही थी। महर्षि वाल्मीकि

शिष्य होने के नाते ये सभी भी वाल्मीकि हो गए। लेकिन आखिर महर्षि वाल्मीकि जी ने सारे देश में से अमृतसर को ही अपने आश्रम के लिए क्यों चुना? सप्त सिन्धु/परिचमोत्तर भारत ही उनके इस नए प्रयोग की साधना स्थली क्यों बना? वाल्मीकि त्रिकालदर्शी थे। वे भविष्य को पढ़ ही नहीं, स्पष्ट देख रहे थे। इसी सप्त सिन्धु के दर्द खैबर से हन्दुस्तान पर विदेशी आक्रमणों की एक लम्बी श्रृंखला शुरू होने वाली थी। उसके लिए ऐसी समाज रचना की जरूरत थी जो उसका मूकावला कर सके। वाल्मीकि जी उसी काम में लगे थे। लेकिन साथ ही रामचन्द्र की शासन व्यवस्था का विश्लेषण भी कर रहे थे ताकि आने वाले शासकों के लिए यह शासन व्यवस्था रोल मॉडल बन सके। यही वाल्मीकि का राम राज्य था, जिसे तुलसीदास ने हजारों साल बाद भी जन भाषा में सूत्रबद्ध करते हुए लिखा- दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज्य सपनेहुं न व्यापा। लेकिन महर्षि वाल्मीकि ने वाल्मीकि के नाम से यह जो सामाजिक समरसता के आसन पर नया समुदाय प्रशिक्षित किया था, वर्षा संकट काल आने पर उस कस्ती पर पूरा उतरा? इसमें कोई ईश कही नहीं कि जब परिचमोत्तर द्वारा से भारत पर अरबों, तुक्कों, मुगल मंगोलों के आक्रमण हुए तो उसको चुनावी देने वालों में से वाल्मीकि समाज अग्रणी भूमिका में था। लेकिन उससे पहले हजारों वर्षों तक इस समाज ने देश में ज्ञान की ज्योति भी प्रज्ज्वलित करने में अपनी भूमिका निर्भाई। लेकिन दुर्भाग्य से इतिहासकारों ने न तो इस दिशा में शोधकार्य किया, न ही वाल्मीकि समाज की संरचना और उसकी गोत्र प्रणाली को समझने की दिशा में कदम उठाया। ज्ञान और शौर्य के शिखर पर बैठा समुदाय धीरे धीरे अधोगति की ओर कैसा चल पड़ा? समाजशास्त्रियों को इन प्रश्नों के उत्तर तलाशने चाहिए थे, लेकिन वे एक रहस्यमय चुप्पी साधे रहे। यह ब्रिटिश चाल थी या स्वयं की निष्क्रियता थी, बाबा साहिब आज्ञेड़कर ने अपनी दो पुस्तकों 'शूद्र कौन थे' और 'अस्सप्य कौन थे' के माध्यम से इन प्रश्नों के उत्तर तलाशने की कोशिश की थी लेकिन उनके देहान्त के बाद उनके इस काम को किसी ने नहीं पकड़ा। एक सहज अनुमान लगाया जा सकता है। तुक्कों व मुगल मंगोलों से टक्कर लेने में वाल्मीकि समाज अग्र पंक्तियों में था, लेकिन दुर्भाग्य से विदेशी हमलावर जीत गए थे।

गोवा राष्ट्रीय खेलों में प्रदेश का प्रदर्शन

भारत के 2023 राष्ट्रीय खेल, जिस भारत के 37वें राष्ट्रीय खेलों के रूप में भी जाना जा रहा है और भविष्य में गोवा राष्ट्रीय खेलों के नाम से भी जाना जाएगा। भारत के राष्ट्रीय खेलों का 37वां संस्करण गोवा में आयोजित हुआ। राष्ट्रीय खेलों में देश के विभिन्न राज्यों व सेना के लगभग 7000 एथलीटों ने 36 खेलों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए अपना अपना दम दिखाया। पिछले वर्ष 2022 में गुजरात ने राष्ट्रीय खेलों का आयोजन किया। दो साल के अंतराल में होने वाले ये खेल कभी तो दस साल बाद भी आयोजित हुए हैं। इस बार भी ये खेल एक वर्ष बाद ही आयोजित हो गए। प्रदेश के खिलाड़ियों ने भी राज्य ओलंपिक संघ के बैनर तले कुछ खेलों में अपना दम दिखाया और पदक जीत कर हिमाचल का नाम रोशन किया है। हिमाचल प्रदेश महिला कबड्डी टीम ने उम्मीद के अनुरूप प्रदर्शन करते हुए हिमाचल प्रदेश की पदक तालिका को स्वर्ण पदक से सजाया है। पिछले दो प्रदेशों से हिमाचल प्रदेश महिला कबड्डी का देश में दबदबा कायम है। जब राज्य में कबड्डी के लिए कोई भी छात्रावास नहीं





टाम न इस बार भा अपना जलवा दिखात हुए स्वग प
दिलाया है। हिमाचल प्रदेश के मुक्केबाज आशीष कु
ने रजत व अशीष वनडोर ने कांस्य पदक जीत कर प
तालिका में योगदान दिया है। बुशु में हिमाचल प्रदेश
प्रशंसात व अशीष मोहम्मद ने अपने अपने वजन में क
पदक जीत कर मान बढ़ाया है। पिछल कई वर्ष
राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता खिलाड़ियों
उनके द्वारा जीते गए पदकों के लिए इनाम बांट सम
आयोजित नहीं हुआ है। अब तो प्रदेश सरकार को चा
कि वह जल्दी ही अपने पदक विजेता खिलाड़ियों के
इनाम बांट समारोह आयोजित कर हिमाचल को ग
दिलाने वालों को सम्मान दे। इसके अलावा अगर
हिमाचल में खेल की मूलभूत सुविधाओं की चर्चा करें
खेल ढांचे को और सुदृढ़ करने की जरूरत है। आज
खेलों में प्रतिस्पर्धा व

सेमीफाइनल की गलतियों को फाइनल में न दोहराएं भारतीय गेंदबाज क्रिकेट वर्ल्डकप 2023 भारत की गेंदबाजी के लिए जाना जा रहा है, लेकिन जिस तरह से सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों ने 327 रन बनाए, उससे भारतीय गेंदबाजी कैपमेंथोड़ी चिंता जरूर महसूस हुई है, क्योंकि अब तक कोई भी टीम भारत के खिलाफ 300 रन का आंकड़ा पार नहीं कर सकी थी। भारतीय गेंदबाजों ने जिस तरह से अपना लोहा मनवाया है, उससे दुनिया भर के बल्लेबाज हैरान-परेशान जरूर हैं। अहमदाबाद में फाइनल से पहले निश्चित रूप से कोच राहुल द्रविड़ अपने गेंदबाजों को पुराने फॉर्म में लाने की मशक्कत कर रहे। मुंबई के बानखेड़े स्टेडियम में पहले सेमीफाइनल में भारतीय बल्लेबाजों ने अपना बखूबी काम किया। कप्तान रोहित शर्मा ने तेज शुरूआत दी और शुभमन गिल ने कप्तान का बखूबी साथ दिया। हालांकि, रोहित अपना अर्द्धशतक पूरा नहीं कर सके, लेकिन उन्होंने जो फाउंडेशन डाली, उसी के कारण भारत 397 रन तक पहुंच सका। शुभमन गिल के 80 रन, विराट कोहली के 117 रन और श्रेयस अश्वर के 105

रनों के अलावा के.एल. राहुल ने अंत में 20 गेंदों पर 39 रनों की शानदार पारी खेली। उम्मीद यही थी कि भारत न्यूजीलैंड को सरते में निपटा देगा और भारत एक बड़ी जीत दर्ज करेगा, लेकिन यहां तारीफ करनी होगी न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियम्सन और डेरिल मिशेल की, जिन्होंने तीसरे विकेट की साझेदारी में 181 रन जोड़े। जिस समय दोनों खिलाड़ी खेल रहे थे तो लग रहा था कि मैच भारत के हाथ से निकल गया है, लेकिन मोहम्मद शमी ने वापसी कराते हुए केन विलियम्सन को आउट किया और उसके बाद टार्म लाथम को शून्य पर पवेलियन भेजा। उसके बाद तो न्यूजीलैंड की टीम लड़खड़ा गई और ताश को छोड़ दिया। इसके बाद भारत ने अपना बखूबी काम किया। कप्तान रोहित शर्मा ने तेज शुरुआत दी और शुभमन गिल ने कप्तान का बखूबी साथ दिया। हालांकि, रोहित अपना अर्द्धशतक पूरा नहीं कर सके, लेकिन उन्होंने जो फाउंडेशन डाली, उसी के कारण भारत 397 रन तक पहुंच सका। शुभमन गिल के 80 रन, विराट कोहली के 117 रन और श्रेयस अय्यर के 105 रनों के अलावा के.एल. राहुल ने अंत में 20 गेंदों पर 39 रनों की शानदार पारी खेली। उम्मीद यही थी कि भारत न्यूजीलैंड को सरते में निपटा देगा और भारत एक बड़ी जीत दर्ज करेगा, लेकिन यहां तारीफ करनी होगी न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियम्सन और डेरिल मिशेल की, जिन्होंने तीसरे विकेट की साझेदारी में

पता का तरह बख्खर गइ, 181 रन जाड़।
लेकिन न्यूजीलैंड के डेरिल
मिशेल और केन विलियम्सन ने भारतीय गेंदबाजों की पोल जरूर खोल दी। जसप्रीत बुमराह 10 ओवर में 64 रन देकर एक ही विकेट ले सके। मोहम्मद सिराज भी महंगे साबित हुए। सिराज ने नौ ओवर में 78 रन देकर एक विकेट ही लिया। रविंद्र जडेजा ने 10 ओवर में 63 दिए और उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। कुलदीप यादव ने 10 ओवर में 56 रन दिए और उन्हें एक ही विकेट मिला। मैन ऑफ द मैच मोहम्मद शार्मी सबसे सफल रहे और उन्होंने अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 57 रन देकर 7 विकेट लिए। वानखेड़े स्टेडियम में भारत को उम्मीद थी कि दोनों स्पिनर कुलदीप यादव और रविंद्र जडेजा चलेंगे, लेकिन दोनों ही विकेटों के लिए तरसते रहे, जो इससे पहले वर्ल्ड कप में नहीं हुआ था। भारतीय गेंदबाजों ने वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल से पहले खल गए। मैचों में ऑस्ट्रेलिया को 199 रन, अफगानिस्तान को 272 रन, पाकिस्तान को 191 रन, बांग्लादेश को 256 रन, न्यूजीलैंड को 273 रन, इंग्लैंड को 129 रन, श्रीलंका को 55 रन, साडथ अफ्रीका को 83 रन और नीदरलैंड को 250 रनों पर स्मरेट दिया था। अहमदाबाद में फाइनल में भारत को अपनी बैटिंग के साथ बॉलिंग पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा। मोहम्मद शर्मी के अलावा बाकी गेंदबाजों को भी अपना 100 प्रतिशत परफॉर्मेंस देना होगा। वैसे तो कुलदीप यादव और रविंद्र जडेजा अच्छा खेल रहे हैं, लेकिन फाइनल में रविचंद्रन अश्विन को भी भारत अंतिम 11 में शामिल कर सकता है। अहमदाबाद में भारत ने अपना पिछला मैच पाकिस्तान के खिलाफ खेला था और 7 विकेट से जीता था। अहमदाबाद में टॉस जीतकर भारत पहले गेंदबाजी करता है तो उसे एक मनोवैज्ञानिक लाभ जरूर मिलेगा। भारत अपने वर्ल्ड कप के तीसरे टाइटल से मात्र एक जीत पीछे है और 19 नवंबर का होने वाले मैच में निश्चित रूप से भारतीय खिलाड़ी कप लाने में जी-जान लगा देंगे।



चलते चलते एक नजर

छठ ग्रत्थारियों को दर्शन ने किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी : मिश्रा

रांची (प्रभात मंत्र संवाददाता) स्टूडेंट फेडेशन बड़ा तालाब छठ पूजा समिति के संप्रश्नक राजीव रंजन मिश्रा ने छठ महापर्व 2023 की तारीखों की जानकारी दी। मिश्रा ने बताया कि हर वर्ष की भासि इस वर्ष भी स्टूडेंट फेडेशन बड़ा तालाब छठ पूजा समिति के द्वारा कोलाहल के कारणीयों के द्वारा आकर्षक पुण्य एवं सौन्दर्य सज्जन कर्तव्य गई है। मिश्रा ने बताया कि समिति के द्वारा विशेष तौर पर बड़ा तालाब के आसपास साफ-सफाई कराया जा रही है। मिश्रा ने बताया की बड़ा तालाब स्थित सुर्य मंदिर में समिति के द्वारा आकर्षक पुण्य सज्जन कर्तव्य जा रही है एवं सभी छठ ग्रत्थारियों को दर्शन में किसी प्रकार की कठिनाई ना हो इसलिए समिति के सदस्य सेवा देने के लिए तैयार है। मिश्रा ने सभी छठ ग्रत्थारियों को आमत्रित किया एवं कहा कि स्टूडेंट फेडेशन बड़ा तालाब छठ पूजा समिति रॉयली आप सभी की सेवा के लिए तत्पर है। छठ महापर्व को सफल बनाने में स्टूडेंट फेडेशन छठ पूजा समिति बड़ा तालाब रॉयली के सेवा केडिया, बर्टी सिंह, दीप गाढ़ी, रहुल सिंह चंकी, विशाल मिश्रा, मो नाफीस, मो परवेज सहित दर्जनों पदाधिकारी एवं सदस्य सेवा कार्य में लगे हुए हैं।

181 छठ ग्रत्थारियों को निशुल्क छठ पूजन की सामग्री दी गई

रांची: हर वर्ष की भासि इस वर्ष भी हिंदुस्तानी कलब स्टेशन रोड चूटिया रांची के अध्यक्ष विक्री सिंह के सौजन्य से 181 छठ ग्रत्थारियों को जो अर्थिक रूप से कमज़ोर हैं निशुल्क छठ पूजन की सापूर्ण सामग्री जिसमें सूप, साड़ी धोंठ दूध के लिए नगद राशि एवं छठ पूजा के उपयोग हेतु पूजन की सूर्यों सामग्री का वितरण किया गया। इस वर्ष भी चूटिया, और्वर्बिज, कृष्णापुरी, द्वारिकापुरी, नायक टोली, एवं नामकर कम के इलाकों की बहनों के बीच छठ पूजन सामग्री का वितरण किया गया है। जिसमें मुख्य अतिथि रांची लोकसभा के सांसद संजय सेठ, झारखण्ड सरकार में मंत्री रहे हैं, रांची के विधायक सीं पी सिंह, रांची महानगर भाजपा के पूर्व अध्यक्ष सरकारीयण सिंह, रांची महानगर भाजपा के पूर्व अध्यक्ष मनोज मिश्रा, गुरुविर रियां सेठी, मनद सिंह, मनुचन राय, डॉ. राकेश सिंह, डॉ. रवि प्रेमचंद काढेला, वार्ड नंबर 14 के पूर्व पार्षद विजय साहू जी चूटिया थाना प्रभारी वेंकटेश, अविचल सिंह, विकेक वर्णवाल, जनर्दन साह, मुत्रा सिंह, राजेश सिंह, प्रमोद राय रेनू सिंह हर हर महादेव समेत समाजसेवी मौजूद हैं।



भागवत कथा को सफल बनाने में राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी ने झोंक दी है अपनी पूरी ताकत

प्रभात मंत्र संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के तत्वाधान में 21 नवंबर से शुरू होने वाले श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ सद्परम्पर्य शांतिगूढ़ देवकीनन्दन वाकुर, जी महाराज के भागवत कथा की तैयारी अंतिम चरण में है। महायज्ञ समिति के मुख्य संरक्षक अर्जुन पाठेय उर्फ गुरु पाठेय ज्ञानश्वल पर कैप कर स्वयं पूरे आयोजन को अंतिम रूप देने में कोई कार कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

वहीं महायज्ञ समिति की युवा टीम आयुरोग पाठेय उर्फ लक्षी, आशीष भारद्वाज, प्रदीप द्वेरे चंदन तिवारी, विकास द्वेरे, आनंद प्रकाश द्वेरे, चंदन आरक, विशाल पाठेय, दिलीप तिवारी, विदु द्वेरे, विकू शुक्ला, तुषा दुर्गा द्वेरे, गोपाल पाठेय, आशीष आरक, दुर्गा द्वेरे, गोपाल द्वेरे, आयोजन का पाठेय सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी इस आयोजन को भव्यता देने के लिए सद्परम्परा का वितरण लगातार सक्रिय है। वहीं महायज्ञ समिति के विवरण हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश द्वेरे, अध्यक्ष शैलेश तिवारी, अनोल द्वेरे, सोशल मीडिया प्रभारी सुशील तिवारी सहित महायज्ञ समिति के कई पदाधिकारी आयोजन को अध्यक्षता देने के लिए लगातार सक्रिय हैं।

महायज्ञ समिति के विवरण हैं। महायज्ञ समिति के अध्यक्ष सह राष्ट्रीय परथुराम युवा वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, महासचिव शैलेश